आईआईटी की कांफ्रेंस में माइक्रोचिप डिजाइन करने वाले विशेषज्ञों ने रखी भविष्य की तस्वीर

शर्ट के कपड़े में होगी माइक्रोचिप, तापमान से लेकर हाव-भाव तक बता देंगे सेंसर

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

आने वाला समय इलेक्ट्रॉनिक्स का है। माइक्रो गैजेट्स ऐसे होंगे जो शर्ट के कपड़े में शामिल हो सकेंगे। इसमें माइक्रोप्रोसेसर और सेंसर तक शामिल होंगे। इससे शरीर और बाहर के तापमान के साथ सामने वाले के हाव-भाव तक पता किए जा सकेंगे। ऐसे ही विषयों पर बात करने के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) की तीन दिनी इंटरनेशनल कांफ्रेंस में दुनियाभर के टेक्नोलॉजी एक्सपर्ट मौजूद थे। विजय नगर स्थित एक होटल में वेरी लॉर्ज स्केल इंटिग्रेशन डिजाइन विषय पर सभी ने अपनी रिसर्च पर बात की।

आईआईटी की इंटरनेशनल कांफ्रेंस में देश-दुनिया के डेलिगेट्स हुए शामिल।

टेक्नोलॉजी से कारों में बढ़ रही है सुरक्षा

एसटी माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी के संदीप भट्टाचार्य ने बताया कि हमारी कंपनी माइक्रोप्रोसेसर बनाती है। जीवन को बेहतर बनाने वाले कई प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनियों को माइक्रोप्रोसेसर बनाकर देते हैं। उदाहरण के तौर पर कार में विंडो, इंफोटेनमेंट और ऑटोमेटिक ब्रेक सिस्टम होता है। इस तरह के कई कामों के लिए माइक्रोप्रोसेसर और प्रोग्राम बनाते हैं। संदीप ने बताया कि बीएमडब्लू और ऑडी जैसी गाड़ियों में काफी इलेक्ट्रॉनिक्स का उपयोग किया जा रहा है। सरकार द्वारा एयर बैग अनिवार्य किए जाने से अब सभी गाड़ियों में यह आ रहा है। टेक्नोलॉजी की सहायता से कारों में सुरक्षा बढ़ाने के कई आधुनिक साधन आ गए हैं।

कारों में 50 फीसदी कीमत टेक्नोलॉजी की होती है

एनएक्सपी सेमीकंडक्टर्स कंपनी में जनरल मैनेजमेंट बेदांता चौधरी ने बताया टेक्नोलॉजी इस समय करवट ले रही है। मैन्युअल उपकरण ऑटोमेटेड होते जा रहे हैं। खासकर ऑटोमोबाइल में बात की जाए तो पहले कार की 90 फीसदी कीमत उसकी बनावट के लिए ली जाती थी, लेकिन अब 50 फीसदी कीमत टेक्नोलॉजी की होती थी। पहले चालक और कार के बीच में कोई नहीं होता था, लेकिन अब टेक्नोलॉजी आ गई है। जैसे ही ब्रेक लगाते हैं पहले सिग्नल माइक्रोकंट्रोलर के पास जाता है और वह कुछ माइक्रो सेकंड में सेंस करता है कि कार किस हालत में है और कार पर ब्रेक का प्रभाव किस तरह देना है। इसी तरह से इलेक्ट्रॉनिक्स का बोलबाला होने से बैटरी एनर्जी की ओर वाहनों को ले जाने की कोशिश हो रही है। सौर ऊर्जा वाहनों पर भी काम हो रहा है।

चिप डिजाइन में ठीक, मैन्युफेक्चरिंग कम काम

सीएसएल कंपनी के एचएस जटाना ने बताया कि चिप डिजाइन के मामले में दुनिया में भारत में 25 से 30 फीसदी काम हो रहा है, लेकिन इसके मैन्युफेक्चरिंग में काफी पीछे है। देश में चंडीगढ़ और बैंगलुरू में ही चिप मैन्युफेक्चरिंग हो रही है। चैन्नई में इसकी पैकेजिंग का काम हो रहा है। हम माइक्रोचिप को और छोटा करने पर जोर दे रहे हैं। इसमें लगने वाले ट्रांजिस्टर का साइज कम किया जा रहा है। अब फ्लेक्सिबल इलेक्ट्रॉनिक्स का उपयोग बढ़ रहा है। इसमें शर्ट के कपड़े को ही सर्किट बना दिया जाता है। इससे तापमान और सामने वाले के हाव-भाव पता करना भी आसान होगा। 5 से 10 साल में यह टेक्नोलॉजी काफी चलन में आ जाएगी। जटाना का कहना है कि वे अब तक 60 माइक्रोचिप बिना किसी शुल्क के बनाकर दे चुके हैं।

पढ़ाई के दौरान प्रेक्टिकल पर दिया जा रहा जोर

इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया के सीईओ एनके मोहापात्रा का कहना है कि स्टूडेंट्स के पास डिग्री होती है, लेकिन स्किल कमजोर रहती है। ऐसा आगे से न हो इसके लिए हम ऐसा कोर्स ऑफर कर रहे हैं जिससे स्टूडेंट्स की स्किल बेहतर होती है। इसे इंजीनियरिंग के साथ भी किया जा सकता है। जिस भी विषय में स्टूडेंट्स को रुचि होती है उसकी मैपरिंग कर पढ़ाई कराई जाती है। कोर्स को कोई भी इंजीनियरिंग संस्थान का स्टूडेंट ज्वॉइन कर सकता है। इससे इंडस्ट्रीज के हिसाब से स्टूडेंट्स को प्रेक्टिकल काम सिखाया जाता है। कोर्स करने के बाद सर्टिफिकेट दिया जाता है। इससे जॉब तलाशने में स्टूडेंट्स को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है।

Nai Dunia (Indore), 5th July 2019, Nai Dunia Live, Page-17